समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 18 पृष्ठः– 4 अंक :– **35** संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

चुनावी घोषणा पत्र कॉंग्रेस का दाँव उल्टा पड़ा– डॉ. किशन कछवाहा

कॉंग्रेस के चुनावी घोषणा पत्र में मध्यप्रदेश के ''शासकीय स्थानों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं के आयोजन पर रोक लगायी जायेगी'' के उल्लेख को लेकर विवाद घटने का नाम नहीं ले रहा है। कांग्रेस ने इस चुनावी वादे के माध्यम से सभी शासकीय सेवकों के मौलिक अधिकारों का हनन कर देने की मंशा जतायी है। ऐसा वचन देना नागरिकों और सरकारी सेवकों में कहीं न कहीं भय पैदा किया जा रहा है। यह भी तब, जब चुनावों के लिये आदर्श आचार संहिता लागू है।

संघ राष्ट्रवादी विचारों को आगे बढ़ाने वाला संगठन है। ऐसे संगठन की शाखाओं में सरकारी कर्मचारियों के जाने पर रोक लगाने का वचन पत्र में उल्लेख किया जाना, कांग्रेस की सरकारी मानसिकता का ही परिचायक है। जब भाजपा सत्ता में नहीं आयी थी, तब भी भाजपा विरोधी सरकारें ऐसे कुत्सित प्रयास कर चुकीं हैं, जिनमें उन्हें हर बार मुंह की खानी पड़ी थी। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का मानना है कि संघ देशभक्तों का संगठन है। सरकारी कर्मचारी ही नहीं, वरन् हर देशभक्त संघ की शाखा में जा सकता है। क्या कांग्रेस नेताओं को इस बात की जानकारी नहीं है कि कर्मचारियों के शाखा में जाने पर लगे प्रतिबंध से सम्बंधित लगभग 100 मामलों में अदालतें संघ के पक्ष में निर्णय दे चुकी हैं। इसके बावजूद बिना सिर–पैर की बातें की जा रही हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता गुड़ विधानसभा से प्रत्याशी सुन्दरलाल तिवारी ने तो बेशर्मी की सीमा लाँघते हुये संघ को आतंकी संगठन तक कह दिया है। यद्यपि प्रदेश अध्यक्ष कमलनाथ ने मामले को सम्हालते हुये सुन्दालाल तिवारी के बयान से किनारा कर लिया है।

कांग्रेस नेता क्षुद्र राजनैतिक फायदे के लिये देशभक्त संगठन पर सवाल खड़ा करते रहे हैं–और हंसी के पात्र बने भी हैं। कांग्रेस नेताओं को जानकारी होना चाहिये कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सामाजिक धरातल पर सांस्कृतिक संगठन है। उसके दो करोड़ से अधिक प्रशिक्षित स्वयंसेवक हैं जिनकी सक्रियता केवल देश के भीतर ही नहीं वरन् देश के बाहर नब्बे देशों में भी देखी जा सकती है। उसके एक–दो नहीं बल्कि अस्सी से अधिक आनुषांगिक संगठन विविध सेवा कार्यों में लगे हुये हैं। इस संगठन की छप्पन हजार पाँच सौ उन्हत्तर (56,569) दैनिक शाखायें नियमित रूप से लगती हैं, तेरह हजार आठ सौ सैंतालिस(13,847), साप्ताहिक मंडली, नौ हजार मासिक शाखायें। लगभग पाँच करोड़ से अधिक स्वयंसेवक नियमित रूप से शाखाओं में आते हैं। क्या कांग्रेस ऐसा संगठन खड़ा करने की बात सोच भी पायेगी?

यह कितना स्पष्ट है कि इस संगठन के स्वयंसेवकों में से ही देश के गौरवशाली पदों राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री पद पर प्रतिष्ठित हैं। इनके अलावा देश की संसद में 283 सांसद, 1460 विधायकों सहित देश के 18 राज्यों में मुख्यमंत्री पद पर बैठे व्यक्ति स्वयंसेवक हैं या संघ परिवार के हिस्सा हैं।

कांग्रेस के नेताओं की इस बचकानी बुद्धि से उपजी गलती ने संघ को बैठे–बैठाये अपने अभियान को आगे बढ़ाने का एक मुद्दा दे दिया। संघ के प्रान्त प्रचारक ने इस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये घोषणा कर दी है कि संघ इसके विरोध में एक व्यापक जन अभियान चलायेगा। यह अभियान सन् 2019 के आगे तक चल सकता है।

गत दिनों कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तुलना मुस्लिम ब्रदरहुड से कर दी थी जिसके कारण उन्हें भी देश भर में व्यापक विरोध ओर आलोचनाओं का शिकार होना पड़ा था। 125 वर्ष पहले स्वामी विवेकानंद ने समुद्र पार जाकर भारत की इस सनातन, सर्वसमावेशी संस्कृति की विजयपताका फहरायी थी। कितना हास्यस्पद है कि आज इसी देश की सत्ता में रह चुकी पार्टी का एक नेता समुद्रपार जाकर इसी भारतीय संस्कृति की तुलना इस्लामिक ब्रदरहुड से कर विवेकानंद का, भारत की महान संस्कृति का और भारत का अपमान कर रहा है।

प्रतिक्रिया स्वरूप स्वयंसेवक कांग्रेस के वचनपत्र में उल्लेखित संघ संबंधी बातों को लेकर सीधे जनता के सामने जायेंगे।

कांग्रेस नेता पूर्व में भी अपने बयानों के कारण चर्चा का विषय बने रहे हैंः– दिग्विजयसिंह ने भी कहा था ''भारत में आर. एस.एस. से ज्यादा खतरा है, न कि इस्लामी आतंकवाद से।'' मणिशंकर अय्यर–''भगवा और तिलक को देखकर गुस्सा आता है।'' कांग्रेस के ही मनीष तिवारी ने कहा ''मैं हिन्दू नहीं हूँ।''

चुनावी परिदृश्य से दूर, चुपचाप बैठे संघ के स्वयंसेवकों एवं आनुषांगिक संगठनों को कांग्रेस के वचनपत्र ने रोष के साथ सक्रियता की परिधि में ला दिया है। जो काम संघ से भाजपा के मदद मांगने पर नहीं हो पाया वह काम अंततः कांग्रेस के वचनपत्र में संघ के बारे में उल्लेखित दो चार पंक्तियों के माध्यम से हो गया। वे दो चार पंक्तियां संघ पर प्रतिबंध लगाने जैसी मंशा व्यक्त करने वाली ही है ऐसा समझा जा रहा है।

पाकिस्तान दखलंदाजी बंद करे (भारतीय संसद द्वारा पारित संकल्प 22 फरवरी 1994)

भारतीय लोकसभा का यह सदन इस बात पर अपनी गहरी चिंता व्यक्त करता है कि पाकिस्तान, 'पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर' में आतंकवादियों को प्रशिक्षित कर रहा है उन्हें हथियार और पैसा देकर जम्मू–कश्मीर के अंदर घुसपैठ करने वाले आतंकवादियों के साथ विदेशी भाड़े के आतंकियों को जम्मू–कश्मीर में भेजा जा रहा है। यह सब कुछ भारतीय जम्मू–कश्मीर में अव्यवस्था, तोड़–फोड़ और लोगों के बीच में तनातनी पैदा करने के लिए किया जा रहा है। यह सदन इस बात को भी दोहराता है कि पाक में प्रशिक्षित आतंकी यहां पर हत्याएं कर रहे हैं और लूट–पाट के साथ जघन्य अपराध में शामिल हैं।

पाकिस्तान के द्वारा घुसपैठ करवाए गए आतंकी लोगों का अपहरण कर रहे हैं और आतंक का वातावरण पैदा कर रहे हैं।

पाक भारतीय जम्मू–कश्मीर राज्य के अंदर आतंकवादियों को हर प्रकार की सहायता देकर तोड़फोड़ की गतिविधियों में लगा रहा है यह सदन इस कुकृत्य की घोर भर्त्सना करता है।

यह सदन पाकिस्तान को चेतावनी देता है कि वह आतंकवाद को बढ़ावा देना बंद करे क्योंकि पाक का यह कदम शिमला समझौता और अंर्तराष्ट्रीय तौर पर मान्य दो राष्ट्रों के बीच में खींचातानी का मूल कारण है। यह सदन पाक को याद दिलाना चाहता है कि भारत का राजनैतिक और प्रजातांत्रिक ढांचा और उसका संविधान अपने नागरिकों को सुरक्षा और उनके मानवाधिकारों की रक्षा की पूरी गारण्टी देता है। यह सदन समझता है कि पाकिस्तान का भारत विरोधी प्रचार और गतिविधियां झूठ पर आधारित है जिसको भारत सरकार स्वीकार नहीं कर सकती और इसका विरोध किया जाना चाहिए। यह सदन पाक को साफ तौर पर बता देना चाहता है कि पाकिस्तान से दिए जाने वाले हैं और पाक को ऐसे वक्तव्य देने से बाज आना चाहिए जो कि वातावरण को दूषित

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

चिन्तन रामराज्य का – डॉ. सतीशचन्द्र चतुर्वेदी, गुना

रामराज्य शब्द सुनते ही सुखी और संपन्न जीवन की कल्पना मन में साकार हो जाती है। सुखी जीवन के आधारों की सारी संकल्पनाएं वहां प्रतिफलित हैं। मानव समाज जब से बना है तब से उसे क्रमशः रोटी, कपड़ा और मकान की चिन्ता व्याप्त होती चली आई है। किसी भी देश की राजनीतिक व्यवस्था या सामाजिक संगठनों की सारी उठा पटक भी वहां के निवासियों के लिए सुख साधन जुटाने का ही संकल्प है। इसीलिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देश में राम राज्य का सपना देखा था।

जब देश की जनता सुखी हो तो वहां के सभी जन परस्पर प्रेम से जीवन यापन करें, बैर भाव न रखें, अपने–अपने अधिकारों का ही भोग करें अतः मानव की मर्यादा और अनुशासन बनाए रखने के लिए नीतियों ने जन्म लिया। रामराज्य के लिए प्रयास करने वाले के व्यक्तित्व में राम के गुणों का अर्थात् शक्ति के साथ–साथ शील का भी होना अनिवार्य है। वह पहले अपने देश का भ्रमण करे, जन–जन के दुःख–दर्द समझे अपने सांस्कृतिक परिवेश को सुरक्षित कर निर्बलों और राष्ट्र–शुभैषियों का जीवन निष्कंटक कर उनका हौसला बढ़ाए।

इस विषय पर आज के संदर्भो में विचार करना बहुत प्रासंगिक है। महाकवि तुलसीदास ने इसका सर्वांगीण दृश्य प्रस्तुत कर संबंधितों का दायित्वों की और भी बखूबी संकेत किया है। वनवासियों के बीच राम राजसी वेशभूषा में शायद तालमेल न बिठा पाते, न उन्हें मित्र बना पाते, न मंतव्य पूरा कर पाते। वे वनवासियों के बीच वनवासियों की तरह ही रहे। इसका अनुसरण गांधी जी ने किया तभी वे देश के दारिद्रय को पूरा संवेदनशीलता के साथ समझ सके थे।

जनता जनार्दन के दुःखों के निवारण और सुखों के संस्थापन का सम्पूर्ण दायित्व वहां की राजनैतिक व्यवस्था का होता है, जो वहां की अभिभावक होती है। राम जिस वंश में अवतरित हुए वह रघुकुल त्यागी राजाओं की परंपरा का वाहक था। इस संदर्भ में आज के कर्णधारों के कुलों पर विचार करें तो अनेक इसके उलट दीन हीन जनता के शोषण से अपना घर भरने वालों का परिदृश्य दिखाई देता है। राम का लक्ष्य जन कल्याण था, तो इनका लक्ष्य अपना हित साधन और पद लोलुपता मात्र है। जहां त्याग ओर शील जैसे दिव्य गुणों की तलाश करना मृगतृष्णा की तरह है। तुलसीदास ने इनको दायित्व बोध कराते हुए यहां तक लिख दिया–

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृपु अवसि नरक अधिकारी।।(2–70–6)

अर्थात् जिसके राज्य में प्यारी प्रजा दुःखी हो वह राजा निःसंदेह नरक का अधिकारी है। अतः अपनी प्रिय अर्थात् धर्मात्मा प्रजा को राजा अपने प्राणों के समान प्रिय समझे। बाद में लौटने पर राम अपनी प्रजा के प्रति अपने प्रेम को ''अति प्रिय मोहि यहां के वासी'' कहकर व्यक्त करते हैं। लंका विजय के उपरान्त राम अयोध्या आकर राज्याभिषिक्त हो जाते हैं। न्यायपूर्वक पूरी संवेदनशीलता के साथ प्रजा का पालन करते हैं। तो एक दिन भरत श्री रामराज्य के विलक्षण प्रभाव का वर्णन करते हैं– अनामयश्च मर्त्यानां साग्रो मासे गतो ह्ययम्।।

जीर्णानामपि सत्वानां
मृत्युर्नायाति राघव।
अरोग प्रसवा नार्यो वपुष्मन्तो हि मानवाः।।(वाल्मीकि के रामायण पृ.713)

हे राघव! आपके राज्य पर अभिषिक्त हुए एक मास से अधिक हो गया, तब से सभी लोग नीरोग दिखाइ देते हैं। बूढ़े प्राणियों के पास भी मृत्यु नहीं फटकती है। स्त्रियां बिना कष्ट सहे प्रसव करती हैं।सभी मनुष्य के शरीर हृष्ट–पुष्ट दिखाई देते हैं। सुखद वातावरण का वर्णन करते हुए भरत राम से कहते हैं कि–

ईदृशों नश्चिरं राजा भवेदिति नरेश्वरः।
कथयन्ति पुरे राजन्
पौरजानपदास्था।।(वा.रा.द्वितीय खण्ड पृ.713)

अर्थात् राजन्! नगर और जनपद के लोग इस पुरी में कहते हैं कि हमारे लिएचिरकाल तक ऐसे ही प्रभावशील राजा रहें। यहां प्रभावशाली शब्द पर ध यान दें तो राम की विनयशीलता शक्ति और सौंदर्य के साथ–साथ चलती है। इसके साथ–साथ –

गुरू गृह पढ़न गए रघुराई। अलप काल विद्या सब आई।।

कहकर राजा राम का सुशिक्षित होना सिद्ध होता है। आज देश की राजनैतिक व्यवस्था में मंत्रियों के लिए शिक्षा का कोई मापदंड नहीं है। बल्कि आज तो राष्ट्र एवं समाज में व्याप्त अनीति एवं भ्रष्टाचार व मनमानी को देखकर आम आदमी कहने लगता हे–''यहां तो रामराज्य चल रहा है। कोई सुनता ही नहीं।'' यहां रामराज्य शब्द का अर्थापकर्ष दिखाई देता है। क्योंकि रामराज्य में प्रत्येक व्यक्ति स्वाधीन था, स्वच्छंद नहीं। महाकवि तुलसी ने विस्तार से रामराज्य के वर्णन में अप्रत्यक्ष रूप से प्रजा के प्रति शासन से अपेक्षाओं की ओर भी संकेत किया हे, जिसे पढ़कर आज के कर्णधारों की स्वार्थपरता पर सिर धुनने के अलावा कुछ नहीं सूझता। तुलसी ने अपने समय के राजाओं के अतयाचारों को भी देखा ओर समझा था इसलिए वे प्रजा के लिए रामराज्य का वर्णन करते हैं, किन्तु कुछ प्रासंगिक पंक्तियां ही यहां अपेक्षित हैं–

राम राज बैठे त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका।
बयरू न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खेई।।
बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेदपथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भय सोक न रोग।

(उत्तरकांड, दोहा 20)

संविधान के अनुसार सैक्युलरिज्म का पर्याय पंथ निरपेक्ष है न कि धर्म निरपेक्ष

वैसे तो स्वतंत्रता प्राप्ति के संदर्भ में संविधान की रचना के दौरान विधान परिषद् में पं. जवाहरलाल नेहरू ने राज्य के सैक्युलर होने की बात कही थी किन्तु संविधान में इस शब्द को दर्ज नहीं किया गया था। सैक्युलर शब्द को प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा लागू आपातकाल के दौरान एक संशोधन द्वारा संविधान में स्थान मिला था जिसके हिन्दी में अधिकृत अनुवादित प्रतिलिपि में सैक्युरिज्म का पर्याय मत (पंथ) निरपेक्ष शब्द दर्ज हैं। किनतु इसका प्रयोग सभी राजनीतिक दल, नेता बुद्धिजीवी और आम जन 'धर्मनिरपेक्ष' कह कर सकते हैं जिसके कारण देश को भारी कीमत चुकानी पड़ी है।

दुर्भाग्य यह रहा है कि कांग्रेस, उसके वंशज अन्य राजनीतिक दल और वामपंथी इसका दुरूपयोग भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और उसके प्रेरक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएस एस) को सैक्युलरिज्म विरोधी बता कर अपने चुनावी हित साधने में लगे हैं और यह सब धर्म शब्द के भ्रांत प्रयोग की आड़ में हो रहा है।

देश में सैक्युलरिज्म के नाम पर जो राजनीतिक शत्रुतापूर्ण अभियान चल रहा हे, उसके संदर्भ में सैक्युलर शब्द की उत्पत्ति और परिभाषा की चर्चा सामयिक होगी। उल्लेखनीय यह है कि सैक्युलर शब्द हमने पश्चिमी देशों से लिया है जिस का वहां यह अर्थ मान्य है कि किसी भी देश का राज्य (शासन) किसी रिलीजन को नहीं अपनाएगा और रिलीजन के क्षेत्र में कोई दखलंदाजी नहीं करेगा। जहां तक हमारे देश का संबंध है, हमने सैक्युलर राज्य की अवधारणा तो अपनाई किन्तु रिलीजन शब्द के पर्याय पंथ की बजाय धर्म शब्द का प्रयोग शुरू कर दिया और अपने राज्य को पंथ निरपेक्ष कहने की बजाय धर्म निरपेक्ष कहने लगे जिस के कई घातक परिणाम भुगत चुके हैं और आज भी यह राष्ट्रीय एकता के लिये संकट का कारण बना हुआ है।

जहां तक धर्म शब्द का संबंध है, इसका किसी भाषा विशेष खास कर विदेशी भाषा में कोई

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

जहाँ–जहाँ हमें भारतीयता के दर्शन होते हैं

अपने देश में कहीं भी जाने पर अपनेपन का एहसास होता है, हर जगह भारतीय संस्कृति की छाप किसी–न–किसी रूप में मिलती है, लेकिन भारत की सीमा से बाहर विदेश जाने पर परायेपन का एहसास होता है; क्योंकि वहाँ की संस्कृति भिन्न है। न तो वहाँ पर अपनों का प्यार है, न सहयोग और न ही निश्चिंतता है। इसलिए बाहर की दुनिया अजनबी–सी प्रतीत होती है। लेकिन दुनिया में कुछ देश ऐसे भी हैं, जहां जाने पर हमें अपनेपन का, अपनी संस्कृति का एहसास होता है; क्योंकि वहां की भाषा, खान–पान, धार्मिक रीति–रिवाज और यहां तक कि संस्कार भी बिलकुल भारतीय हैं। अपने ही देश से शताब्दियों पहले गए भारतीय संस्कृति के अग्रदूतों ने भारत से बाहर जाकर अपने ही ढंग का एक अलग भारत बसाया है। ऐसे ही कुछ देशों की कहानी कुछ इस प्रकार है।

(1)**मॉरीशस**– यह अफ्रीका के दक्षिण पूर्वी छोर पर बसा हुआ एक छोटा–सा द्वीप है, लेकिन इसे देखने पर यही प्रतीत होता है कि यह भारत का ही कोई हिस्सा है। मॉरीशस पर लंबे समय तक फ्रांस का आधिपत्य रहा। भारत में जब अंगरेजों व फ्रांसीसियों के बीच संघर्ष चल रहा था, तब अपनी स्थिति बेहतर बनाने के लिए अंगरेजों की नजर मॉरीशस पर गई और इन्होंने इस पर आक्रमण करके इसे फ्रांसीसियों से छीन लिया और भारत से ले जाकर अनेक लोगों को वहां पर बसाया। इनके द्वारा वहां पर भारतीय संस्कृति का प्रभुत्व स्थापित हो पाया।

लगभग दो सौ वर्ष पूर्व जब भारतीय यहां पहुंचे, तो उन्होंने उसे मारीच देश कहा। उस समय भारतीयों को अपनी भाषा में अभिव्यक्ति की आजादी नहीं प्राप्त थी, उन्हें रामायण व लोकगीत गाने से भी रोका जाता था, ताकि विद्रोह की चिनगारी न पनपे, लेकिन फिर भी भांति–भांति के प्रलोभनों व प्रतिबंधों के बावजूद भारतीय लोग चोरी–चोरी अपनी भाषा, संस्कृति व धर्म से जुड़े रहे।

रामायण की अनुगूंज आज भी यहां भारतीयों की आस्था का संबल है और श्रीरामचरितमानस की चौपाइयां कष्ट में फंसे हुए लोगों के लिए संजीवनी बूटी का काम करती है। यहां भारतीय विषयों पर न सिर्फ गांव व गलियों के नाम रखे गऐ हैं, बल्कि सिनेमाघरों, दुकानों व बसों तक के नाम भारतीय नामों, जैसे–नालंदा, तक्षशिला, सम्राट अशोक, सूर्यवंशी आदि रखे ताजे हैं। यहां घरों की बनावट में भी भारतीय वास्तुकला का पूरा ध्यान रखा जाता है। मॉरीशस यात्रा के समय लेखक मार्क ट्वेन को यह कहना पड़ा कि भगवान ने पहले मॉरीशस बनाया होगा, फिर उसकी नकल पर स्वर्ग का निर्माण किया होगा। आज भी मॉरीशस में हर भारतवंशी के आंगन में हनुमान जी के चबुतरे और लाल झंडियां, सांस्कृतिक मूल्यों की विजय की लघुपताकाएं बनकर लहरा रही हैं। यहां की जीवनशैली में भी भारतीय संस्कृति का प्रतिबिम्ब साफ दिखता है।

(2)**फिजी**–मॉरीशस के बाद फिजी ही एकमात्र ऐसा देश है, जहां भारतीय मूल के नागरिक वहां की लोकतांत्रिक व्यवस्था के सर्वोच्च पद 'प्रधानमंत्री' तक पहुंचे हैं। यहां की कुल आबादी का 38 प्रतिशत हिस्सा भारतीय समुदाय का है। यहां भारतीय घरों में आरती व हनुमान चालीसा के पाठ आमतौर पर सुने जा सकते हैं और भारतीय त्योहारों में सबसे मुख्य पर्व दिपावली भी यहां पूरी आस्था व निष्ठा से मनाई जाती है। इस त्योहार को धार्मिक मान्यताओं के साथ–साथ सांप्रदायिक सौहार्द के रूप में भी मनाया जाता है। फिजी में चलने वाले अनेक विद्यालयों में भारतीय तौर–तरीकों से पढ़ाई की व्यवस्था हे। भारत की कई आध्यात्मिक व सामाजिक संस्थाओं की शाखाएं भी यहां सक्रिय हैं। यहां पर भारतीय संस्कृति की प्रत्येक संस्कार वैदिक तौर–तरीकों से सम्पन्न कराए जाते हैं।

(3)**थाईलैंड**–यहां के 95प्रतिशत नागरिक बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं और यहां के बौद्ध मंदिरों की खूबसूरती अनोखी है और इनकी संख्या 18 हजार से भी अधिक है। वहां की भाषा में मंदिरों को 'वाट' कहा जाता है। बौद्ध धर्म का हीनयान, थाईलैंड का राजधर्म है। बौद्ध मान्यताओं का मुख्य धर्म करूणा है और थाई जीवन पर इसका अमिट प्रभाव है।

इसके अतिरिक्त यहां रामायण, श्रीराम व रामलीला से जुड़ी हुई बहुत–सी बातें देखने को मिलती हैं। थाईलैंड के नागरिकों का यह गहरा विश्वास है कि रामायण की कई घटनाएं उनके अपने देश में घटी थीं। थाईलैंड में भी एक अयोध्या है और श्रीराम के पुत्र लव के नाम पर लवपुरी (लोपबुरी) भी है। इसके साथ ही थाईलैंड की एक नदी का नाम भी सरयू है, जो अयोध्या के निकट ही बहती है और इस तरह थाईलैंड की सांस्कृतिक जीवनधारा में रामायण की संस्कृति समाहित है। यही नहीं, थाईलैंड की अपनी स्थानीय रामायण भी है, जिसे 'रामकियेन' के नाम से जाना जाता है। इस रामायण के रचयिता नरेश राय प्रथम थे। उल्लेखनीय है कि इन्हीं के वंशज आज भी थाईलैंड के शासक हैं।

(4)**कंबोडिया**–विश्व में भगवान विष्णु का सबसे विशाल मंदिर 'अंगकोर वाट' कंबोडिया में ही है, जिसका निर्माण अंगकोर नरेश सूर्य बर्मन द्वितीय 1113–50 ने प्रारम्भ किया था। इस मंदिर के जीर्णोद्धार व प्रबंधन का दायित्व भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के पास है। इस मंदिर को देखने के लिए दुनिया भर से लाखों लोग हर साल यहां आते हैं। कंबोडिया में हिंदू राजवंश की स्थापना दूसरी शताब्दी में ही हो गई थी। यहां भगवान बुद्ध, शिव व श्रीराम की मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। यहां की लोक संस्कृति के नायक श्रीराम हैं। इसलिए रामायण के कई प्रसंगों को सुंदर ढंग से दीवारों पर यहां उकेरा गया है। कंबोडिया की रामायण को 'रामकेर' के नाम से जाना जाता है।

(5)**नेपाल**–भारत के पड़ोसी देश नेपाल में भारतीय आध्यात्मिकता व संस्कृति की जड़ें बड़ी गहरी हैं। यहां कहीं पर भी जाने पर यही प्रतीत होता है कि जैसे–हम भारत के ही किसी गांव या शहर में घूम रहे हों। यहां बागमती नदी के समीप स्थित हिंदुओं का प्रसिद्ध पशुपतिनाथ मंदिर है और यहां के दुर्लभ रूद्राक्ष की पूरे विश्व में मान्यता है। नेपाल में भारतीयों के विश्वास व श्रद्धा के अनेक केंद्र स्थित हैं और भारत में मनाए जाने वाले सभी तीज–त्योहारों की झलक नेपाल में देखी जा सकती है। नेपाल विश्व का एकमात्र हिंदू राष्ट्र है एवं यहां सारे शासकीय कार्य, विक्रम संवत् के अनुसार ही चलते हैं। यहां नववर्ष भी विक्रम संवत् के परिवर्तन के साथ मनाया जाता है।

(6)**इंडोनेशिया**–भारत के निकटवर्ती देशों में इंडोनेशिया का बाली द्वीप हिंदू संस्कृति की खुशबू से सराबोर है। ऐतिहासिक बाली द्वीप की संस्कृति विश्व के पर्यटकों को आकतर्षित करती है। ऐसी मान्यता है कि यहां पर भारतीय संस्कृति की नींव ऋषि मार्कण्डेय ने रखी थी। बाली के हर गांव में तीन मंदिर होते हैं। इन मंदिरों की सालगिरह बड़ी धूम –धाम से मनाई जाती है। विवाह व अन्य शुभ अवसरों पर यहां संस्कृत मंत्रों का उच्चारण किया जाता है और इनके बिना कोई भी शुभ कार्य नहीं होता।

पूरे बाली में हनुमान, राम व गणेश भगवान की मूर्तियां देखने को मिलती हैं। इन प्रतिमाओं के निचले हिस्से पर सफेद–काले चेकदार कपड़े पहनाए जाते हैं, जो अच्छाई व बुराई के प्रतीक हैं। यहां राजमार्गों पर महाभारतकालीन घटनाओं की प्रतिमाएं जगह–जगह देखने को मिलती हैं। बाली के लोगों में महाभारत के युद्धस्थल कुरूक्षेत्र को देखने की इच्छा बलवती है और यहां के लोग पवित्र गंगा नदी में स्नान व शिव मंदिर के दर्शन को प्राथमिकता देते हैं।

(7)**गयाना**–दक्षिण अमेरिका के उत्तरपूर्व में स्थित गयाना भी भारतीय संस्कृति व इसके मूल्यों के कारण विख्यात है। भारतीय कैलेंडर के अनुसार सभी भारतीय त्योहारों को गयाना में पूरे विधि–विधान से मनाया

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

शेष पृष्ठ क्र.3 के आगे का

जाता है और इसमें प्रमुख पर्व दीपावली पर यहां राष्ट्रीय अवकाश होता है।

(8)**मलेशिया**–यहां रहने वाले भारतीय मूल के लोगों की आस्था रामकथा से गहराई से जुड़ी हुई है और यहां के जनजीवन में रामायण मनोरंजन व प्रेरणा का सशक्त माध्यम बनकर उभरी है। यहां पर पुतलियों के द्वारा रात्रिकाल में रामायण के प्रसंगों का मंचन किया जाता है, जिनमें भारतीय मूल के लोग पूरी साज–सज्जा तथा तैयारी के साथ सपरिवार सम्मिलित होते हैं।

मलेशिया में रामायण को 'हेकायत सेरीरामा' के नाम से जाना जाता है। यहां पर हिंदू समुदाय की आबादी लगभग 8 प्रतिशत है, जिसमें अधिकांश दक्षिण भारतीय लोग हैं। इसी कारण यहां मनाए जाने वाले त्योहारों में दक्षिण भारत की परंपराओं का स्पष्ट प्रभाव है और यहां पर भगवान शिव के पुत्र कार्तिकेय के मंदिर भी सर्वाधिक हैं। यहां भी दीपावली पर्व के दिन राष्ट्रीय अवकाश रहता है तथा घर के बड़े–बुजुर्ग इस दिन घर–घर जाकर युवाओं को आशीर्वाद व उपहार देते हैं।

(9)**श्रीलंका**–श्रीलंका के साथ तो भारत का संबंध पौराणिक काल से रहा है। भगवान राम व रावण के मध्य लंका में हुआ युद्ध तो रामायण का आधार है ही, साथ ही भगवान बुद्ध के समय में भी वहां पर बौद्ध धर्म का प्रचार विस्तार से हुआ। श्रीलंका के हर नगर एवं हर क्षेत्र में भारतीय संस्कृति की छाप अमिट रूप से देखने को मिलती है। जब स्वामी विवेकानंद शिकागो धर्म महासभा को संबोधित करने के उपरांत पहली बार भारत लौटे तो सबसे पहले उनका जहाज कोलंबो ही पहुंचा था और उन्होंने उसे भारतभूमि कहकर ही संबोधित किया था।

(10)**सूरीनाम**–सूरीनाम, दक्षिण अमेरिका में स्थित वह देश है, जिसे वहां के निवासी भारत का अभिन्न अंग मानते हैं। ऐसी मान्यता है कि देश का नाम भी भगवान सूर्य से निकल करके आया और इसीलिए वह देश सूरीनाम के नाम से विख्यात है। सूरीनाम में अनेक भारतीय मंदिर स्थित हैं और पौराणिक देवी–देवताओं की पूजा–उपासना वहां के दैनिक क्रम में सम्मिलित है। सूरीनाम में भारतीय संस्कृति के प्रसार के लिए एक विशेष मंत्रालय भी स्थापित किया गया है।

इस तरह भारत व भारतीय संस्कृति की छाप केवल अपने देश में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी गहराई से रची–बसी है व पुष्पित–पल्लवित हो रही है। अपने देश में भले ही भारतीय संस्कृति की गौरव–गरिमा पर विदेशी संस्कृति हावी हो रही है, लेकिन विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति लोगों का सम्मान आज भी बरकरार है; क्योंकि यह संस्कृ अपने देश से दूर होने पर भी बड़े ही जतन से संजोई व संभाली गई है।

शेष पृष्ठ क्र.2 के आगे का

पर्याय नहीं है। इस शब्द की अवधारणा से लक्षित होती है जीवन शैली, नैतिक मूल्य और कर्तव्य समूह। रिलीजन शब्द का हमारे यहां पर्याय है पंथ या मत। इसलिये धर्म, रिलीजन (पंथ) का पर्याय तो नहीं है, तथापि सभी पथ धम्र के पोषक माने जाते हैं क्योंकि सभी पंथ और मत नैतिकता व कर्तव्यपालन के लिये प्रेरित करते हैं। हमारे यहां न समाज को पंथ हीन माना गया है न राज्य को। हमारी संस्कृति की देन हे न केवल सभी पंथों को मान्य करना बल्कि सभी का आदर भी करना। इसके लिये हम सर्वपंथ समभाव शब्दों का प्रयोग करते हैं और यहां शासक (राजा) सभी पंथों को समान रूप से पनपने, फलने–फूलने ओर उनके संरक्षण के अवससर प्रदान करता रहा है। स्पष्ट है कि यह दृष्टिकोण सैक्युलरिज्म (पंथ निरपेक्षता) से कहीं अधिक व्यापक और समावेशी है।

ऐतिहासिक विडम्बना यह रही कि कांग्रेस ने अपने देश को जाने अनजाने प्राचीन राष्ट्र नहीं माना और नवराष्ट्र के निर्माण के लिये उसने जो प्रयास किये, उसमें उसने देश में विभिन्न पंथ समूहों की एकता को आधार बनाया जोकि स्वतंत्रता संग्राम के दौर में प्रचलित इन पंक्तियों से प्रतिपादित किये जाता रहा – हिन्दु, मुस्लिम, सिख ईसाई। हम सब हैं भाई–भाई।

उसकी इस सोच नीति में विभिन्न पंथक समूहों में अलगपन

का भाव पुष्ट होता गया। विशेष कर इस्लामपंथी भाईचारे में और कांग्रेस द्वारा उसे 'खुश करने' की कोशिशों के बावजूद वह स्वतंत्रता संग्राम में पूरी तरह भागीदार नहीं बन पाया। यहां तक कि इसका परिणाम पाकिस्तान बनने के रूप में भुगतना पड़ा। वास्तव में आवश्यकता इस भाव को जगाने और पुष्ट करने की थी कि भारत हमारी माता है और हम सब उसकी संतान और राष्ट्र के घटक हैं।

मगर ऐसा नहीं हुआ और आज भी वोट बैंक की राजनीति के कारण अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के नाम पर दूरी और टकराव का वातावरण बनाए रखा जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि सभी राजनीतिक दल, उनके नेता तथा सामाजिक व अन्य समूह व संस्थान सैक्युलरिज्म को पंथ निरपेक्ष तक सीमित रखें। धर्म शब्द की गरिमा को बढ़ावा दें जो नैतिक मूल्यों और कर्तव्यों को पोषित करता है ताकि नैतिक मूल्यों और कर्तव्यपालन की गम्भीर कमी को पूरा करने का वातावरण बने, जिसकी आज अनिवार्य आवश्यकता महसूस की जा रही है।

शेष पृष्ठ क्र.1 के आगे का

करने वाले और लोगों को उकसाने वालें हों।

जम्मू–कश्मीर का वह क्षेत्र जो पाक के गैर कानूनी कब्जे में है, वहां मानवाधिकारों का हनन हो रहा है और उन लोगों को प्रजातांत्रिक आजादी नहीं हे। यह सदन इस बात की भी भर्त्सना करता है। भारत की जनता की ओर से यह सदन दृढ़ता के साथ घोषणा करता है कि–

1. **''जम्मू–कश्मीर राज्य भारत का अभिन्न अंग है और रहेगा। इसे बाकी देश से अलग करने की किसी कोशिश का पूरी शक्ति से और हर प्रकार के साधनों का उपयोग करके विरोध किया जाएगा।''**
2. **''देश की एकता, प्रभुसत्ता और भौगोलिक अखण्डता की रक्षा करने के लिए भारत के पास पर्याप्त संकल्प और क्षमता है।''**
3. **''यह सदन मांग करता है कि पाकिस्तान जम्मू–कश्मीर राज्य की धरती को तुरन्त खाली करे जिस पर उसने आक्रमण करके अवैधानिक कब्जा किया हुआ है।''**
4. **''सदन निश्चय करता है कि भारत के अंदरूनी मामलों में पाकिस्तान की दखलांदाजी का पूरी शक्ति से मुकाबला किया जाएगा।''**

सूचना

कृपया आप अपना ई–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकोशल के ई मेल में भेजने का कष्ट करें ताकि महाकोशल संदेश आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । – सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा-
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com Mo.- 07612416163